सुनील कुमार त्रिपाठी

जन्मस्थान- ग्राम-पीरनगर, पोस्ट -कमलापुर ,जिला-सीतापुर
प्रकाशन- 'गीतिकालोक'
सम्मान- 'गीतिकाश्री सम्मान' 'काव्यश्री सम्मान' 'साहित्य सुधाकर सम्मान''पं०रविन्द्र नाथ मिश्र सम्मान' 'अनागत मार्तंड सम्मान' 'साहित्य रत्न सम्मा
सम्प्रति- इलेक्ट्रॉनिक्स व्यवसाय

भूख खाली पेट लेटी

सैकड़ों दुत्कार सहकर फिर खड़ी है,
द्वार पर ऋण के, जरूरत हाथ जोड़े।

लत लगी जब से परिश्रम को नशे की,
भूख खाली पेट लेटी, तिलमिलाती।
बोझ पलकों पर उठाए, भोर जागे,
लौटती है सांझ हर दिन, लड़खड़ाती।

दाल आटा तेल सब्जी सब नदारद,
नाक भौं छूँछी रसोंई भी सिकोड़े।

काँपता असमर्थता ओढ़े बुढापा,
ताक में घुसपैठ की कुत्सित हवाएं।
चीथड़ों से देह ढाँके। लाज गुमसुम,
छटपटाती खीझती अभ्यर्थनाएँ।

मात्र चुल्लू भर दिहाड़ी जब मिली तो,
क्या नहाए जिंदगी फिर क्या निचोड़े।

डेढ़ टाँगों की अपाहिज ये गृहस्थी,
पोंछती है फर्श, करती साफ जूठन।
कनखियों से ताड़ता, धनवान पौरुष,
ब्याज या फिर मूल किसका दे प्रलोभन।

बेबसी सम्मुख झुकी सम्पन्नता के,
आंख नीची रीढ़ घुटने पाँव मोड़े।

मैं प्रतीक्षारत रहूँगा

शेष उर में, श्वांस जब तक,या अखंडित आस जब तक
मैं प्रतीक्षारत रहूँगा , मैं प्रतीक्षारत रहूँगा।

हों न जाती पूर्ण जब तक, चिर प्रतीक्षित कामनाएं।
या न मिलती सिद्धि जब तक,निष्फलित सब साधनाएं।
तज न देता ताप जब तक, काम संयम से लिपटकर,
या बिलों में घुस न जाती, फन उठाती वासनाएं।

मन रचाता रास जब तक, भोगरत सन्यास जब तक,
मैं प्रतीक्षारत रहूँगा , मैं प्रतीक्षारत रहूँगा।
शेष उर में, श्वांस जब तक,या अखंडित आस जब तक
मैं प्रतीक्षारत रहूँगा , मैं प्रतीक्षारत रहूँगा।

चीथड़ों पर व्यंग्य कसता , रेशमी परिधान जब तक।
या न लेता थाम अपने, कान खुद अभिमान जब तक।
पेट का परिमाप जब तक, ले न लेती रिक्त थाली,
त्यक्त जूठन की न मिटती,या कुटिल मुस्कान जब तक।

दूर मुख से ग्रास जब तक,कण्ठ में है प्यास जब तक,
मैं प्रतीक्षारत रहूँगा , मैं प्रतीक्षारत रहूँगा।
शेष उर में, श्वांस जब तक,या अखंडित आस जब तक
मैं प्रतीक्षारत रहूँगा , मैं प्रतीक्षारत रहूँगा।

लेखनी जब तक न हंसकर, वेदना के गीत लिख दे।
हार मस्तक पर न अरि के,चढ़ स्वघोषित जीत लिख दे।
पाठकों की आंख जब तक, नम न कर दें गीत मेरे,
या न अधरों पर ठहर कर, बूँद कोई प्रीत लिख दे।

सुधि सुकोमल पास जब तक,है अटल विश्वास जब तक,
मैं प्रतीक्षारत रहूँगा,मैं प्रतीक्षारत रहूँगा।
शेष उर में, श्वांस जब तक, या अखंडित आस जब तक,
मैं प्रतीक्षारत रहूँगा , मैं प्रतीक्षारत रहूँगा।

ISSN:2583-8849